City International School

ANNUAL EXAMINATION 2015 – 2016

Date : 03/03/2016 **Marks : 80**

Std : VIII **Subject : Hindi** **Time :** 3 hrs

SECTION A [40 MARKS]
Attempt all questions

Q. 1 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग २५० शब्दों में निबंध लिखिए :- **(15)**

i. 'विपति कसौटी जो कसे, सोई साँचे मीत' है। इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

ii. आपके विद्यालय का वार्षिक खेलकूद दिवस ———।

iii. त्यौहार आज के संघर्षमय जीवन में नवजीवन का संचार करते है इनकी उपयोगिता लिखिए।

iv. आपके विद्यालय में एक मेले का आयोजन किया गया संक्षेप में बताइए कि उस मेले के आयोजन क्या उद्देश्य था। आपने और आपके मित्रों ने उसमें क्या सहयोग दिया। उस मेले में कितने और कैसे मंडप लगे थे और उस मेले का क्या परिणाम रहा।

v. ''लोभ पाप की जड है।" इस कथन के आधार पर कहानी लिखिए।

Q. 2 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर १२० शब्दो मे पत्र लिखिएः- **(7)**

i. आपका अपने मित्र से किसी बात को लेकर विवाद हो गया। आपने भाववेश में उसे कुछ अशोभनीय शब्द कह दिये। शान्तचित होने पर अपनी गलती का आभास होने से आप आत्मग्लानि से भर उठे। घटना का विवरण देते हुए क्षमा याचना हेतू मित्र को पत्र लिखिए।

ii. विदयालय के कुछ नियम आपको असुविधाजनक प्रतीत होते हैं। प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर इन नियमों में परिवर्तन की माँग कीजिए साथ ही बताइये कि वे नियम विद्यार्थियों के लिए अनुपयोगी क्यों हैं।

Q. 3 नीचे लिखे गद्यांश को ध्यान से पढिए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

उशीनर पुत्र हरिभक्त महाराज शिवि बडे ही दयालु और शरणागत वत्सल थे। एक समय राजा शिवि एक महान यज्ञ कर रहे थे। इतने में भयाक्रांत एक कबूतर राजा के पास आया और उनकी गोद में छिप गया। उसके पीछे उड़ता हुआ एक विशाल बाज़ वहाँ आया और वह मनुष्य की-सी भाषा में उदार-हृदय से राजा से बोला - ''हे राजन! पृथ्वी के धर्मात्मा राजाओं में आप सर्वश्रेष्ठ हैं, पर आज आप धर्म से विरुद्ध कर्म करने की इच्छा कैसे कर रहे हैं? मैं भूख से व्याकूल हूँ। मुझे यह कबूतर भोजन के रुप में मिला है, आप इस कबूतर के लिए आपना धर्म क्यों छोड रहे हैं?"

राजा शिवि ने उत्तर देते हुए कहा- ''मैं यह भयभीत कबूतर तुम्हें नहीं दे सकता क्योंकि तुमसे डरकर यह कबूतर अपनी प्राणरक्षा के लिए मेरे समीप आया है और जो मनुष्य शरणागत की रक्षा नहीं करते या लोभ, देष अथवा भय से उसे त्याग देते हैं, उनकी सज्जन निंदा करते हैं। भय में पड़े हुए जीवों की रक्षा करने से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है। हे बाज़! तुम आहार चाहते हो, मैं तुम्हारे दुख का भी नाश चाहता हूँ,

अतः तुम मुझसे कबूतर के बदले में चाहे जितना और आहार माँग लो।" बाज सोच-विचारकर बोला- ''हे राजन! यदि इस कबूतर पर आपका इतना ही प्रेम है तो इस कबूतर के ठीक बराबर का तोलकर आप अपना मांस मुझे दे दीजिए।"

राजा शिवि ने एक तराजू मँगवाया और उसके एक पलडे में कबूतर को बैठाकर दूसरे में वे अपना मांस काट-काटकर रखने लगे और उसे कबूतर के साथ तोलने लगे। कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए और बाज की भूख के निवारण के लिए महाराज शिवि अपने शरीर का मांस स्वयं प्रसन्नतापूर्वक काट-काटकर दे रहे थे। अपने सुखभोग की इच्छा को त्याग कर सबके सुख में सुखी होने वाले सज्जन ही दूसरों के दुख में सदा दुखी हुआ करते हैं। धन्य है त्याग का आदर्श!

तराजू में कबूतर का वजन मांस से बढता गया। राजा ने संपूर्ण शरीर का माँस काटकर रख दिया, परंतु कबूतर का पलडा नीचा ही रहा। तब राजा स्वयं तराजू पर चढ़ गए। राजा शिवि के तराजू में चढते ही नभ से पुष्पवृष्टि होने लगी। इतने में वह बाज़ और कबूतर अंतर्ध्यान हो गए और उनके बदले में दो दिव्य देवता प्रकट हो गए। दोनों देवता इंद्र और अग्नि थे। इंद्र ने कहा-''राजन! तुम्हारा कल्याण हो। मैं इंद्र हूँ और जो कबूतर बना था वह अग्नि हैं। हम लोग तुम्हारी परीक्षा लेने आए थे। तुमने जैसा अतुलनीय कार्य किया है वैसा आज तक किसी ने नहीं किया। यह सारा संसार मोहमाया के कर्मपाश में बाधा हुआ है, परंतु तुम जगत के दुखों से छुटने के लिए करुणा से बँधे गए हो। तुमने बड़ों से ईर्ष्या नाहीं की, छोटों का कभी अपमान नहीं किया और बराबर वालों के साथ कभी स्पर्धा नहीं की, इससे तुम संसार में सर्वश्रेष्ठ हो। संसार में तुम्हारे सदृश्य अपने सुख की इच्छा से रहित, एकमात्र परोपकार की बुध्दि वाले साधु केवल जगत के हित के लिए ही पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। तुम दिव्य रुप धारण करके चिरकाल तक पृथ्वी का पालन कर अंत में भगवान के ब्रह्मलोक में आ जाओगे।"

इतना कहकर इंद्र और अग्नि स्वर्ग को चले गए। राजा शिवि यज्ञ पूर्ण करने के बाद बहुत दिनों तक पृथ्वी राज्य करके अंत में दुर्लभ परम-पद को प्राप्त हुए। सत्य है, अपना पेट भरने के लिए तो पशु भी जीते हैं, किंतु प्रशंसा के योग्य जीवन तो उन लोगों का है जो दूसरों के लिए जीते हैं। विधाता ने आकाश में जल से भरे बादलों को और फल से भरे वृक्षों को परोपकार के लिए रचा है। दुख में डुबे हुए प्राणियों के दुख का नाश ही सबसे बडा धर्म है। बडे-बडे यज्ञों का फल समय पर क्षय हो जाता है, पर भयभीत प्राणी को दिए गए अभयदान का फल कभी क्षय नहीं होता।

प्रश्न :-

i. महाराज शिवि कौन थे? कबूतर महाराज शिवि की शरण में क्यों आया? **(2)**

ii. महाराज शिवि ने बाज को कबूतर देने से मना क्यों किया? **(2)**

iii. कबूतर के बराबर माँस तोलने का उद्देश्य होते हुए भी महाराज शिवि तराजू के पलडे पर स्वयं क्यों चढे? **(2)**

iv. महाराज शिवि के तराजू के पलडे पर चढते ही कौन-सी विचित्र घटना घटित हुई? **(2)**

v. महाराज शिवि की कथा से आपको क्या शिक्षा मिली? **(2)**

Q. 4 **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :-**

i. **निम्नलिखित शब्दों में से किन्ही दो शब्दों के दो - दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।** **(2)**

a. भाग्य b. प्रसिद्ध c. शत्रु d. शरण

ii. **निम्न शब्दों में से किन्ही दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए।** **(1)**

a. धर्मात्मा b. भ्रष्टाचार c. विकास d. संक्षिप्त

iii. **भववाचक संज्ञा बनाइए। (किन्ही दो के)** **(1)**

a. करना b. मधुर c. मलिन d. कृपण

iv. **निम्नलिखित मुहावरों में से किन्ही एक की सहायता से वाक्य बनाइए।** **(1)**

a. गागर में सागर भरना b. गुदडी का लाल

v. **निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए। (किन्ही एक के)** **(1)**

a. जो रोग छूत से फैले b. जो रचना किसी अन्य भाषा का अनुवाद हो

vi. **कोष्टक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए। (किन्ही दो के)** **(2)**

a. मैं आठ बजे पाठशाला जाती हूँ। (भूतकाल में बदलिए)

b. शिष्य इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं थे। (लिंग बदलिए)

c. कवि सम्मेलन में <u>कवि</u> ने अपनी <u>कविता</u> सुनाई।
(रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखिए।)

SECION – B [40 MARKS]
गुंजन

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और उसके नीच दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

Q. 5 ''तब चीथड़ें के लिए दौड़ते क्यों थे?"

i. प्रस्तुत पंक्ति का वक्ता कौन है? लडके के गूदड़ खींचकर भागने पर क्या हुआ ? **(3)**

ii. सॉंईं अपना मनोविनोद कैसे करता था? **(2)**

iii. प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य लिखिए? **(3)**

iv. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए। **(2)**

a. उलाहनों b. खिझाने c. सराहना d. साम्राज्य

Q. 6 ''अपराध तो उसे आज कह रहा हूँ, उन दिनों तो वह पराक्रम था?"

i. विजय के मन में कौन-सी धारणा प्रदूषण की तरह घर कर गई थी? **(3)**

ii. विजय ने क्या अपराध किया था? **(2)**

iii. मास्टर जी ने विजय को पेपर पूरा करने के लिए कक्ष में वापस क्यों भेज दिया? **(3)**

iv. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए। **(2)**

a. विस्मृति b. प्रतिष्ठा c. विषाद d. निमग्न

Q. 7 "प्रकृति के बिना मानव जीवन संभव नहीं।"

i. वृक्षरोपण का क्या अर्थ है? वृक्षारोपण को पर्व की तरह कहाँ-कहाँ मनाया जाता है? **(3)**

ii. मनुष्य सदा से किस-प्रकार प्रकृति पर आश्रित रहा है? **(2)**

iii. जनसंख्या वृध्दि जंगलों के विनाश का कारण किस प्रकार बन रही है। **(3)**

iv. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए। **(2)**

a. पौराणिक b. संरक्षण c. उद्‌गम d. प्रावधान

साहित्य-सागर

Q. 8 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

''चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा।
अभिमन्यु – जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारे दु:ख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।।"

i. प्रस्तुत पंक्तियों के कवि का नाम लिखकर ''भिक्षुक कविता" का केंन्द्रीय भाव लिखिए। **(3)**

ii. भिखारी और उसके बच्चे जूठी पत्तलें चाटने के लिए क्यों विवश हैं ? **(2)**

iii. प्रस्तुत पद्यांश में व्यक्त कवि की पीड़ा को स्पष्ट कीजिए? **(3)**

iv. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए। **(2)**

a. झपट लेना b. अड़े हुए

c. दया-दृष्टि पाना d. दाता